4 चौथा भाग

आईए

नहजुल बलाग़ा

से सीखते हैं

(दोस्ती)

हुज्जतुल इस्लाम

जवाद मोहद्दिसी

ट्राँस्लेशन : अब्बास असग़र शबरेज़

आईए

नहजुल बलाग़ा

से सीखते हैं

(दोस्ती)

हुज्जतुल इस्लाम

जवाद मोहद्दिसी

ट्राँस्लेशन: अब्बास असग़र शबरेज़

किताब : आईए! नहजुल बलाग़ा से सीखते हैं (4) (दोस्ती)

राईटर : हुज्जतुल इस्लाम जवाद मोहद्दिसी

ट्रांस्लेटर : अब्बास असग़र शबरेज़

पहला प्रिन्ट : सितम्बर 2016

तादाद : 2000

पब्लिशर : ताहा फ़ाउंडेशन, लखनऊ

प्रेस : न्यु लाइन प्रोसेस, दिल्ली

क़ीमत : 25 रूपए
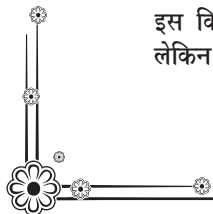
शहीद मुर्तज़ा मुतह्हरी

नहजुल बलाग़ा में इमाम अली[अ०] की ज़िंदगी की झलकियाँ साफ़ दिखाई पड़ती हैं। इमाम अली[अ०] का कलाम भी बिल्कुल उन्हीं के जैसा है क्योंकि कोई भी आदमी हो उसकी ज़बान से निकलने वाली बातें असल में उसकी रूह से ही निकल रही होती हैं यानी उसकी बातें उसकी रूह व सोच का पता देती हैं। एक नीच रूह की बातें भी गिरी हुई ही होती हैं और एक महान रूह की बातें व सोच भी महान होती है। वन-डायमेंश्नल रूह का कलाम भी वन-डायमेंश्नल ही होता है और जिसकी रूह मल्टी-डायमेंश्नल होती है उसका कलाम भी मल्टी-डायमेंश्नल होता है। इस दुनिया में इमाम अली[अ०] एक ऐसी हस्ती का नाम है जिसमें किसी भी तरह की कोई कमी नहीं है इसलिए उनका कलाम भी ऐसा है जिसमें किसी भी हिसाब से कोई कमी नहीं है। उनके कलाम में इरफ़ान भी अपने सब से ऊँचे दर्जे पर पाया जाता है और फ़िलॉस्फ़ी भी, आज़ादी व जँग भी अपनी आख़िरी ऊँचाईयों पर दिखाई देती है तो अख़्लाक़ भी अपने आसमान पर दिखाई देता है।

इसलिए नहजुल बलाग़ा भी इमाम अली[अ०] की तरह हर हिसाब से एक ऐसी किताब है जिसमें किसी भी तरह की कोई कमी नहीं है।

contents

पहली बात

आज की दुनिया भीड़-भाड़, हुल्लड़-हंगामे और चकाचौंध की दुनिया है जिसमें इन्सान और इन्सानियत के ख़िलाफ़ हर वक़्त शैतानी चालें और शैतानी साज़िशें खेली जा रही हैं जिसकी वजह से हम जैसे इन्सान तरह-तरह की साइकॉलोजिकल व रूहानी बीमारियों और मुश्किलों में घिरे हुए हैं बल्कि मुश्किलों के एक ऐसे दलदल में फंसे हुए हैं जिस से निकलने का रास्ता भी नज़र नहीं आता। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि जिन दुनियावी बातों की वजह से हम इन मुश्किलों में फंसे हुए हैं, उन मुश्किलों से निकलने के लिए भी हम उन्हीं लोगों की तरफ़ देखते हैं जिन्होंने हमारे चारों तरफ़ इन मुश्किलों का जाल बुना है। नतीजा यह होता है कि हम मुश्किलों में और फंसते जाते हैं। जबकि ज़िन्दगी की मुश्किलों से बाहर निकलने और एक सही ज़िन्दगी बिताने के लिए ख़ुदा ने अपनी किताब क़ुरआन और मासूम इमामों की शक्ल में इल्म के ख़ज़ाने हमारे पास भेजे हैं। इमामों व अहलेबैत[अ०] की ज़िंदगी और उनका बताया रास्ता हमारे लिए सबसे अच्छा रास्ता था और उनमें भी हज़रत अली[अ०] ने जो कुछ कहा या लिखा उस को समेट कर लिखी गई किताब नेहजुल बलाग़ा सबसे

अलग है जो हर ज़माने में हमें सही रास्ता दिखाने के लिए सबसे रौशन चिराग़ है।

नेहजुल बलाग़ा एक ऐसी किताब है जिसमें हज़रत अली[अ०] ने ज़िन्दगी के हर मसले और हर मुश्किल के बारे में बात की है और उस मुश्किल से निकलने के लिए हमें रास्ता दिखाया है।

जो किताब आपके हाथों में है इसमें कोशिश की गई है कि दुनिया भर में मशहूर किताब 'नेहजुल बलाग़ा' में लिखी बातों को बिलकुल आसान ज़बान में अपने उन नौजवानों के सामने पेश किया जाए जो हज़रत अली[अ०] के कलाम को पढ़ना और समझना चाहते हैं ताकि हम अपने पालने वाले से ज़्यादा से ज़्यादा क़रीब हो सकें।

यह किताब **आईए! नहजुल बलाग़ा से सीखते हैं** (**4**) ईरान के एक मशहूर राइटर और स्कॉलर हुज्जतुल इस्लाम जवाद मोहद्दिसी ने लिखी है जो ''दोस्ती'' के बारे में है। आपके सामने यह उसका हिन्दी ट्रांस्लेशन है।

इस सीरीज़ की पहली कड़ी **तौबा**, दूसरी **दुआ** और तीसरी **शैतान** के बारे में थी जो तीनों छप चुकी हैं। अब यह इस सिलसिले की चौथी कड़ी है।

इस सीरीज़ के अभी और भी हिस्से बाक़ी हैं। अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ दी तो वह भी जल्दी ही आपके सामने पेश किए जाएंगे।

किताब छपती है तो उसमें कहीं न कहीं कमियां या ग़ल्तियाँ रह ही जाती हैं। यह किताब आपके हाथों में है। इसे पढ़ने के बाद जो कमियाँ आपको दिखाई दें वह हमें ज़रूर बताईए ताकि अगले एडिशन में उन्हें दूर किया सके।

ताहा फ़ाउंडेशन
लखनऊ

अपनी बात

एक बहुत अच्छा मुहावरा है कि ''हज़ार दोस्त हों तो भी कम हैं और एक दुश्मन हो तो भी बहुत है''।

सवाल यह है कि दोस्त कौन है? और दोस्ती किसे कहते हैं? सच्चा दोस्त कौन होता है? दोस्ती की शर्तें क्या हैं और दोस्ती में किस हद तक जाया जा सकता है? दोस्ती को मज़बूत बनाने या तोड़ने वाले फ़ैक्टर्स कौन-कौन से हैं? दोस्ती किन लोगों से करना चाहिए? और किन लोगों की दोस्ती से बचना ज़रूरी है?

दोस्ती के बारे में यह और इन जैसे कई और सवाल सामने आते हैं।

इन्सान का समाज में रहने वाला नेचर ही उसे दोस्ती और मोहब्बत पर उकसाता है। ज़िन्दगी के मैदान में भी दोस्तों से मदद माँगना और उन पर भरोसा करना आम ज़िंदगी की मुश्किलों को बर्दाश्त करने और कामयाबियों तक पहुंचने में मददगार होता है। दूसरे शब्दों में यूं कहा जाए कि दोस्ती इन्सान के लिए एक बहुत बड़े सहारे की तरह होती है।

इसलिए दोस्ती, इन्सान की एक रूहानी (Spritual) ज़रूरत भी है और समाजी ज़रूरत भी। साथ ही यह वह रिश्ता भी है जिसकी वजह से इन्सान एक दूसरे के साथ मिल कर रहते हैं।

इन्सान का अपने दोस्तों और साथियों से असर लेना भी एक आम सी बात है। शायद यही वजह है कि फ़ारसी

ज़बान में एक शेर बहुत मशहूर है:

> पहले तुम यह बताओ कि तुम ने ज़िन्दगी किन लोगों में गुज़ारी है फिर मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम कौन हो ?

इसलिए यह एक ऐसा सब्जेक्ट है जिसकी तरफ़ सही से ध्यान देना, इसकी ज़रूरत और इस से होने वाले नुक़सान की पहचान करना, ग़लत दोस्ती के ख़तरों को जानना और बुरे दोस्तों से दूर रहना बहुत ज़रूरी है ताकि हमारी यह रूहानी ज़रूरत और ज़िन्दगी का भरोसा किसी ख़तरनाक अख़लाक़ी बीमारी (Moral Disaster) और बुराई की वजह न बन जाए।

हम अपनी ज़िन्दगी में जो भी काम करते हैं, उसके लिए हमें समझ, पहचान, इल्म और तजुर्बे की ज़रूरत पड़ती है। इसलिए दोस्ती के बारे में भी सही पहचान और समझदारी चाहिए ताकि हम यह रास्ता बिना किसी ग़लती के तय कर सकें और इस रास्ते में दिलों के डाकुओं से बच सकें।

उम्मीद है कि दोस्ती के बारे में नहजुल बलाग़ा में कही गई बातें हमें हिदायत का रास्ता दिखाएंगी और साथ ही नहजुल बलाग़ा नामी इल्म के ख़ज़ाने से हमारे हाथ बड़े क़ीमती मोती आएंगे।

ख़ुदा करे कि इमाम अली[अ०] की हिदायतों और नसीहतों के साए में आपकी दोस्तियाँ मज़बूती भरी, अच्छी और आपको नेक रास्ते की तरफ़ ले जाने वाली बनें! और आपके अच्छे दोस्त ख़ुदा के बताए हुए रास्ते पर हमेशा आपके साथी व मददगार रहें। आमीन!

जवाद मोहद्दिसी
क़ुम, ईरान

दोस्ती

इन्सानी रूह मोहब्बत और मेहरबानी के साए में परवान चढ़ती है। दोस्ती की ज़रूरत इन्सान के अंदर हमेशा से रहती चली आई है। जब इन्सान किसी को अपना दोस्त बनाता है और उसकी दोस्ती के साथ आगे बढ़ता है तो ज़िन्दगी की मिठास कई गुना ज़्यादा हो जाती है। इसके अलावा तन्हाई और अकेलेपन के एहसास से छुटकारा भी मिल जाता है।

नहजुल बलाग़ा में दोस्त और दोस्ती के बारे में इमाम अली[अ०] ने बड़ी क़ीमती बातें कही हैं और मोहब्बत व दोस्ती को ज़िन्दगी की असली ज़रूरतों में गिनाया है।

इमाम अली[अ०] एक जगह फ़रमाते हैं:

> लोगों में सब से ज़्यादा बेकार इंसान वह है जो अपनी उम्र में किसी को अपना भाई न बना सके और उस से भी गया गुज़रा वह है जो पाकर भी उसे खो दे।[1]

मशहूर फ़ारसी शायर शेख़ सादी कहते हैं:

> जो दोस्त एक उम्र की मेहनत के बाद हाथ आया हो, उसे एक पल में नाराज़ नहीं करना चाहिए।

हम आगे चलकर इस बारे में भी बात करेंगे कि किस

को किस तरह अपना दोस्त बनाया जा सकता है और वह कौन से फ़ैक्टर्स हैं जिनकी वजह से दोस्तियां ख़त्म हो जाती हैं? लेकिन इस से भी ख़ास बात 'दोस्त बनाने' का हुनर है। एक असली आर्टिस्ट वही है जो अपने अख़्लाक़ और अपने मेल-जोल के बल पर दूसरों को अपनी तरफ़ खींचकर उनके साथ बेहतरीन अन्दाज़ में पेश आए और उन्हें अपना दोस्त बनाकर उन्हें दिल से अपना चाहने वाला बना सके जिससे उसके आसपास बेहतरीन दोस्तों से भरा हुआ एक सर्किल बन जाए या वह ख़ुद किसी अच्छे इन्सान के दोस्तों के सर्किल में शामिल हो जाए। ऐसा करना आर्ट भी है और समझदारी भी।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> मेल-मोहब्बत पैदा करना अक़्ल और समझदारी का आधा हिस्सा है।[(2)]

अगर किसी आदमी के अंदर दोस्त बनाने, दूसरों को अपनी तरफ़ खींचने और उनके साथ मेहरबानी से पेश आने का हुनर न हो तो ऐसे इन्सान के हाथ से एक ऐसा बहुत बड़ा ख़ज़ाना निकल जाता है जो ज़िन्दगी में आगे बढ़ने में जगह-जगह उसकी मदद कर सकता था। तो क्या ऐसा करना नासमझी नहीं है?

इन्सान की रिश्तेदारियाँ व दोस्तियाँ उसे मदद देने, उसके ग़म को कम करने और उसकी हिम्मत बढ़ाने में एक बहुत बड़ा रोल निभाती हैं। लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि इन्सान के कुछ हमदर्द दोस्त रिश्तेदारों से भी बढ़कर काम आते हैं और हर मौक़े पर आगे बढ़कर सहारा देते हैं। यही वजह है कि इमाम अली[अ०] ने दोस्ती को एक तरह की फ़ायदेमंद रिश्तेदारी कहा है।

इमाम[अ०] फ़रमाते हैं:

> दोस्ती इंसान की अपनी बनाई हुई रिश्तेदारी है।[(3)]

साथ ही इमाम अली[अ०] ने दोस्तों के हाथ से निकल

जाने को इन्सान की रूहानी ग़रीबी बताया है:

> परदेसी वह है जिसका कोई दोस्त न हो।[(4)]

जो चीज़ एक इन्सान को दूसरे इन्सानों से जोड़ती है वह उनका आपसी रूहानी रिश्ता, दिली मोहब्बत और दोस्ती का एहसास है। यह वही एहसास है जिसकी वजह से कभी कभार अजनबी लोग क़रीबी रिश्तेदारों से भी ज़्यादा ख़ास बन जाते हैं, लेकिन इसी एहसास के ख़त्म हो जाने पर इन्सान के अपने रिश्तेदार भी उसके लिए ग़ैरों जैसे बन जाते हैं।

इसी रूहानी एहसास और ज़िन्दगी की ख़ूबसूरती को बचाए रखने के लिए हज़रत अली[अ०] दोस्तों और दोस्ती भरे रिश्तों को बाक़ी रखने पर बहुत ज़ोर देते हैं क्योंकि दोस्तों को खो देना एक तरह की तन्हाई, ग़रीबी और लाचारी है:

> दोस्तों को खो देना परदेसी बन जाने जैसा है।[(5)]

यही वजह है कि जिन लोगों के दोस्त नहीं होते वह लोग आमतौर पर उलझनों और डिप्रेशन का शिकार होते हैं और अकेलेपन का एहसास उन्हें घुला देता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि ऐसे लोग दोस्ती के नाम पर धोखेबाज़ों और मक्कारों के हत्थे चढ़ जाते हैं जो उन्हें कहीं न कहीं नुक़सान पहुँचाकर ही दम लेते हैं।

इन्सान की ज़िन्दगी में अच्छे दोस्त उसकी आख़िरत संवारने या बिगाड़ने में भी बहुत अहम रोल निभाते हैं।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> रास्ते से पहले अपने हमसफ़र के बारे में अच्छी तरह पूछ-गछ कर लो।[(6)]

इस हदीस में इमाम अली[अ०] दरअसल ज़िन्दगी में मिलने वाले दोस्तों की तरफ़ इशारा करना चाहते हैं क्योंकि अगर इन्सान का दोस्त भरोसेमंद न हो, बदअख़लाक़ और बे अदब हो तो वह मुश्किलों में अपने दोस्त का साथ छोड़ देता है या फिर नुक़सान पहुँचाकर दोस्ती के बजाए दुश्मनी

कर बैठता है। इसलिए ऐसे इन्सान की पहचान बहुत ज़रूरी है जो ज़िन्दगी के इस सफ़र में एक अच्छा व भरोसेमंद हमसफ़र बनकर हमारे साथ आया हो या ख़ुद हम ही उसे अपना हमसफ़र बनाकर उसके साथ सफ़र तय करने के लिए निकल पड़े हों।

इसलिए सबसे पहले किसी के साथ सफ़र करने के आदाब (Islamic Norms) को जानना बहुत ज़रूरी है। दोस्ती के मामले में जिस बात पर ध्यान देने की ख़ास ज़रूरत है, वह है ख़ुदग़र्ज़ी वाली दोस्ती, वक़्ती दोस्ती, ग़लत और अंधी मोहब्बत वाली दोस्ती और इससे होने वाले नुक़सान।

सामने की बात है कि अगर किसी चीज़ या किसी इंसान से किसी की मोहब्बत हद से ज़्यादा बढ़ जाए तो उस इंसान की आंखों पर पर्दे पड़ जाते है और उसे कुछ भी नज़र नहीं आता, अगर कुछ दिखाई भी देता है तो बस वह चीज़ या वह इंसान। इस तरह कभी-कभार इन्सान सामने वाले की बहुत सी बुराईयों और कमियों की तरफ़ ध्यान ही नहीं दे पाता जिसकी वजह से इस तरह की मोहब्बत व दोस्ती का असर सिर्फ़ और सिर्फ़ नुक़सान की शक्ल में सामने आता है।

अगर इमाम अली[अ०] एक तरफ़ दोस्तों से मोहब्बत व दोस्ती की तारीफ़ करते हैं तो वहीं दूसरी तरफ़ अंधी मोहब्बत और उससे होने वाले नुक़सानों के बारे में ख़बरदार भी करते हैं, ताकि दोस्तियाँ इस बात की वजह न बन जाएं कि इन्सान सच्चाईयों से ही मुंह फेर ले या उन्हें देख ही न पाए। जिसका नतीजा ज़ाहिर है कि यही होता है कि वह अनजाने में गुलाब के बजाए कांटों में उलझ जाता है।

इस अंधी मोहब्बत के बारे में हज़रत इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> जो आदमी किसी चीज़ से बहुत ज़्यादा मोहब्बत करता है, वह चीज़ उसकी आँखों को अंधा और दिल को मरीज़ बना देती है। वह देखता है तो बीमार आँखों से और सुनता है तो न सुनने वाले कानों से।[(7-8)]

सवाल यह है कि अगर इन्सान तन्हाई या बुरे लोगों से दोस्ती के दोराहे पर खड़ा हो तो उसे कौन सा रास्ता चुनना चाहिए ?

बेशक! बुरे दोस्त और बुरी दोस्ती से तन्हाई या सिरे से दोस्तों का न होना ही अच्छा है।

यूँ तो इन्सान को उसकी तन्हाई भी कभी-कभी असली सोने में बदल देती है लेकिन सच्चे दोस्तों की मोहब्बत में कुछ अलग ही जादूगरी होती है।

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-11
2- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-142
3- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-211
4- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
5- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-65
6- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
7- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-107
8- यह वही बात है जैसा कि कहते हैं कि इश्क़ इन्सान को अंधा-बहरा बना देता है।
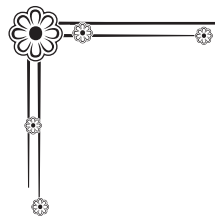
अच्छा दोस्त कौन होता है?

अच्छा दोस्त अनमोल होता है जिस पर जान भी छिड़क दी जाए तो कम है।

लेकिन अच्छा दोस्त होता कौन है ? उसकी ख़ुसूसियतें (Qualities) क्या हैं ? सच्चे दोस्त और झूठी दोस्ती वाले लोगों को पहचानने का तरीक़ा क्या है ?

एक अच्छे और सच्चे दोस्त की सब से ख़ास बात यह होती है कि वह अपने दोस्त के साथ सच्ची मोहब्बत करता है, मुश्किल के वक़्त उसका साथ नहीं छोड़ता और मुसीबतों में उसकी मदद करता है। ऐसा दोस्त ग़म हो या ख़ुशी, आसानी हो या परेशानी यानी हर हाल में अपने दोस्त का हाथ थामे रहता है और उसका हमदर्द होता है, बिल्कुल एक सगे भाई की तरह।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> किसी को उस वक़्त तक दोस्त नहीं समझा जा सकता जब तक वह अपने भाई का तीन जगहों पर साथ न दे: मुसीबत के वक़्त, उसकी पीठ पीछे और उसके मरने के बाद।[1]

इसी तरह एक और जगह पर इमाम फ़रमाते हैं:

> सच्चा दोस्त वह है जो पीठ-पीछे भी अपनी दोस्ती को निबाहे।[2]

एक अच्छा दोस्त सिर्फ़ अपने दावे से नहीं पहचाना
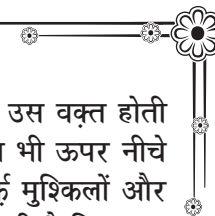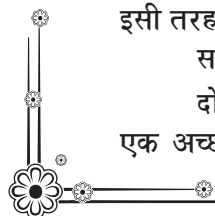
जाता बल्कि अच्छे दोस्त की सही पहचान उस वक़्त होती है जब ज़िन्दगी के उतार-चढ़ाव में हालात भी ऊपर नीचे होते हैं। एक सच्चे दोस्त की पहचान सिर्फ़ मुश्किलों और बुरे वक़्त में ही हो सकती है। इसलिए ज़रूरी है कि अगर अच्छे और सच्चे दोस्तों का चुनाव करना पड़े तो यह चुनाव अख़्लाक़ी और इंसानी उसूलों (Moral & Human Values) को सामने रखकर किया जाए क्योंकि दोस्ती के लिए हर ऐरे-ग़ैरे पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> परखे बिना हर किसी पर भरोसा कर लेना कमज़ोरी है।[3]

कितने ही ऐसे लोग हैं जो दावा करने वालों की दोस्ती से धोखा खा जाते हैं और फिर ''भेड़ के भेस में भेड़िया'' लोगों से दोस्ती करके आख़िर में उनकी चालों का शिकार हो जाते हैं।

अच्छा दोस्त वही है जो अच्छे कामों में इन्सान का मददगार हो और अगर उसे कहीं भी कोई बुराई दिखाई दे तो पूरी सच्चाई के साथ अपने दोस्त को बताए ताकि उसका दोस्त उस काम को करने से बच सके। ऐसा नहीं होना चाहिए कि वह भी उसकी ख़ुशामद में सही बात को उस से छिपाए रखे या उसे बुरे कामों से दूर करने की कोशिश ही न करे।

कुछ दोस्त ऐसे भी होते हैं जो इन्सान को गुनाहों की तरफ़ ढकेल देते हैं या अपने दोस्त के गुनाहों व ग़ल्तियों को बुरा नहीं समझते और चुप रहते हैं। यही वह मौक़ा है जहाँ अच्छे दोस्त और बुरे दोस्त उभर कर सामने आते हैं। अच्छा दोस्त अपने दोस्त की ग़ल्तियों व गुनाहों पर चुप रह ही नहीं सकता लेकिन बुरा दोस्त कुछ बोलता ही नहीं है बल्कि वह भी बुराईयों में अपने दोस्त का साथ देता है। यहाँ तक कि अगर वह ख़ुद तो बुराईयों में अपने दोस्त का साथ न दे लेकिन उसे भी न टोके तब भी इस्लामी हिसाब से यह ग़लत है और ऐसा करने वाला दोस्त बुरा है।
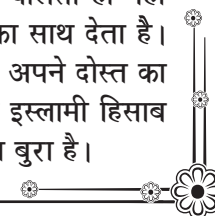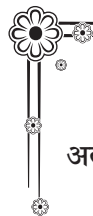
नहजुल बलाग़ा के ख़ुतब-ए-मुत्तक़ीन में इमाम अली[अ०] दीनदारों की पहचान इस तरह करवाते हैं:

> अच्छा दोस्त वह होता है जो अपने दोस्त की वजह से भी कोई गुनाह नहीं करता।[(4)]

हसद (Jealousy) एक बहुत बुरी बीमारी है जो अगर किसी के दोस्त में पाई जा रही हो तो जहाँ इस से उस इंसान की बुराई का अन्दाज़ा होता है, वहीं इस से दोस्ती के बर्बाद होने का ख़तरा भी पैदा हो जाता है। सच्चा दोस्त वह होता है जो अपने दोस्तों की तरक़्क़ी और आराम चाहता है और कभी भी अपने दोस्तों के माल-दौलत, अच्छाईयों और ओहदे या शोहरत वग़ैरा से नहीं जलता।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> किसी दोस्त का अपने दोस्त से हसद करना उसकी दोस्ती की कमज़ोरी है।[(5)]

अच्छे दोस्त की पहचान के लिए उसे आज़माया जाना बहुत ज़रूरी है। कभी ऐसा भी होता है कि हम जिसे अपना सच्चा दोस्त समझते हैं वही आज़माए जाने पर पूरा नहीं उतरता और बुरा दोस्त साबित होता है।

शेख़ सादी कहते हैं:

> मैंने जिसे पिस्ते की तरह असली बीज समझा था, वह प्याज़ की तरह एक के ऊपर छिलका साबित हुआ।[(6)]

हज़रत अली[अ०] हमें ख़बरदार करते हुए फ़रमाते हैं कि बिना आज़माए किसी को अपना दोस्त नहीं बनाना चाहिए। कभी-कभी आज़माए जाने का नतीजा बहुत बुरा होता है और हम जिसे दोस्त समझते हैं, वह हमारा दुश्मन निकलता है।

> आज़माओगे तो दुश्मनी हो जाएगी।[(7)]

इसलिए किसी को भी दोस्त बनाना हो तो दोस्ती करने से पहले ही उसे आज़मा लो क्योंकि लोगों के अंदर का हाल और उनकी छिपी हुई बातें सिर्फ़ आज़माए जाने के
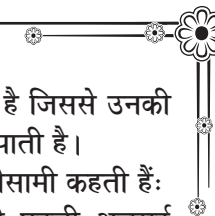
बाद ही सामने आती हैं। यही वह तरीक़ा है जिससे उनकी सच्चाई और मोहब्बत खुलकर सामने आ पाती है।

एक मशहूर ईरानी शायर परवीन एतेसामी कहती हैं:

> ऐ परवीन! दोस्तों की सबसे पहली अच्छाई उनकी सच्चाई है। इसलिए कभी भी बिना आज़माए किसी को अपना दोस्त न बनाना।

अच्छी बातें और अच्छी आदतें एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं। किसी इन्सान में एक अच्छी आदत उसकी दूसरी अच्छी आदतों का पता अपने आप दे देती है। अगर हमें किसी दोस्त में कोई अच्छी बात दिखाई दे तो हमें चाहिए कि हम उसमें दूसरी अच्छी बातों की तलाश में भी रहें। सिर्फ़ इसी तरह हम अपने लिए अच्छे दोस्त ढूँढ सकते हैं।

इमाम अली[अ०] ने इस बात को इस तरह कहा है:

> अगर किसी के अंदर कोई अच्छी बात दिखाई दे तो उसके अंदर वैसी ही दूसरी अच्छी बातों की उम्मीद भी लगाए रखो।[(8)]

मशहूर आलिम इब्ने मीसम बोहरानी, इमाम अली[अ०] की इस बात को इस तरह बयान करते हैं:

> जब भी किसी के अंदर कोई अच्छी बात दिखाई दे तो यह इस बात की तरफ़ इशारा है कि उसमें और भी अच्छाईयां होना चाहिएँ। जैसे अगर एक इन्सान सच्चा है तो यक़ीनन उस से वफ़ादारी और अच्छे मेल-जोल की उम्मीद भी रखना चाहिए। इसी तरह अगर किसी में पाकीज़गी पाई जाए तो उसमें दूसरी अच्छाईयां जैसे रहम, मेहरबानी और मोहब्बत भी ज़रूर होंगी।[(9)]

अच्छा दोस्त एक ऐसी दौलत है जिसकी कोई क़ीमत नहीं लगाई जा सकती।

1-हिकमत-134, 2-ख़त-31, 3- हिकमत-384, 4- ख़ुतबा-191, 5-हिकमत-218, 6-गुलिस्तान, चेप्टर/2, 7-हिकमत/434, 8-हिकमत-445, 9- शरहे नहजुल बलाग़ा, इब्ने मीसम, 5/455

समझदार दोस्त

खुले दिल का होना और मोहब्बत या मेल-मिलाप जैसी चीज़ें ही हैं जो इन्सान की दोस्ती को क़ीमती और उसके दोस्तों को मोहब्बत के लायक़ बनाती हैं। अगर आप किसी को अपने दिल में जगह देते हैं तो उस इंसान को ऐसा होना चाहिए कि वह आपका हमराज़, अमानतदार और भरोसेमंद हो, जो दोस्ती की इज़्ज़त करना जानता हो और मुसीबत में अपने दोस्तों का साथ न छोड़ता हो। सच्चे दोस्त वही होते हैं जो न सिर्फ़ अपने दोस्त की मौजूदगी में सच्चे और उसका भला चाहने वाले हों, बल्कि उसकी पीठ पीछे भी वफ़ादार और उसके हिमायती रहें, जो अपने दोस्त से बेवफ़ाई न करते हों और न ज़रा-ज़रा सी बातों पर अपनी दोस्ती तोड़ने वाले हों। ऐसे दोस्त अपने दोस्तों की आसानियों व परेशानियों और ग़मों व ख़ुशियों में यानी हर मौक़े पर साथ देने वाले होते हैं।

एक सच्चा दोस्त जब अपने दोस्त को अच्छी तरह से पहचान लेता है तो फिर उस पर पूरी तरह भरोसा करता है, फिर वह इधर-उधर की बातों पर कान नहीं धरता और अपने दोस्त की तरफ़ से अपना दिल मैला नहीं होने देता।

हज़रत अली[अ०] फरमाते हैं:

> जो चुग़लख़ोर की बात पर भरोसा करता है

> वह अपने दोस्त को खो देता है।[1]

जलन, दुश्मनी और नफ़रत भरी बातें इतनी ख़तरनाक होती हैं कि अगर किसी इन्सान पर अपना असर डाल दें तो इंसान अपने दोस्त के बारे में भी ग़लत सोच सकता है जिससे उसकी दोस्ती तक ख़त्म हो सकती है। अगर हम किसी को अच्छी तरह से नहीं जानते तब तो हमें चाहिए कि हम उसके बारे में दूसरों की राए सुनें लेकिन अगर हम अपने दोस्त को अच्छा, भरोसेमंद और सच्चा दोस्त मानते हैं तो हमें उसके बारे में दूसरों की बुरी बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देना चाहिए।

इमाम अली[अ०] इस बारे में फ़रमाते हैं:

> अगर तुम्हें अपने किसी भाई की दीनदारी के पक्का होने और उसके चाल-चलन के बारे में सही से पता हो तो फिर उसके बारे में सुनी सुनाई बातों पर कान मत धरो। ध्यान रखो! कभी तीर चलाने वाला तीर चलाता है और इत्तेफ़ाक़ से तीर ग़लती कर जाता है और बात ज़रा से में इधर से उधर हो जाती है।[2]

अच्छे दोस्तों के साथ किस तरह रहना चाहिए, इमाम अली[अ०] इस बारे में भी हमें बताते हैं:

> ख़ुद को अपने भाई के लिए इस बात पर तैयार कर लो कि जब वह दोस्ती तोड़े तो तुम उसे जोड़ो। वह मुँह फेरे तो तुम आगे बढ़ो और उसके साथ मेहरबानी से पेश आओ। वह तुम्हारे लिए कंजूसी करे तो तुम उस पर ख़र्च करो। वह दूर होना चाहे तो तुम उसके पास जाने की कोशिश करो। वह सख़्ती करता रहे मगर तुम नर्मी करो, वह ग़लती करे मगर तुम उसके लिए कोई न कोई बहाना तलाश कर लिया करो। यहाँ तक कि जैसे तुम उसके ग़ुलाम हो और वह तुम्हें नेमतें देने वाला
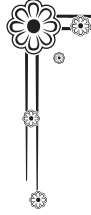
तुम्हारा मालिक है। मगर ख़बरदार! यह भी ध्यान रहे कि यह बर्ताव किसी ग़लत जगह पर मत करना और किसी ग़लत आदमी के साथ यह तरीक़ा मत अपनाना।[3]

इसलिए अगर दोस्त समझदार, सच्चा और वफ़ादार हो तो ज़रूरी है कि उसके साथ उसी हिसाब से अच्छा तरीक़ा अपनाया जाए और अगर उसमें कुछ कमियां हैं तो उन्हें अन्देखा किया जाए। ख़ास बात यह है कि हम इस नेमत को अच्छी तरह से समझ लें और अपनी मोहब्बत को बर्बाद न होने दें यानी अपनी मोहब्बत को किसी ऐसे दोस्त पर न लुटा दें जो हमारी मोहब्बत के लायक़ ही न हो।

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-239
2- नहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-139
3- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
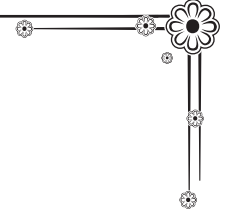
दोस्ती की शर्तें

दोस्ती की जड़ों को मज़बूत बनाने और बाक़ी रखने के लिए ज़रूरी है कि जहाँ एक तरफ़ दोस्ती को कमज़ोर कर देने वाली बातों को समझा जाए और फिर उनको ख़त्म किया जाए, वहीं दूसरी तरफ़ उन चीज़ों पर भी ध्यान दिया जाए जो दोस्ती के इस नन्हे से पौधे को मज़बूती देने का काम करती हैं ताकि दोस्ती के गुलशन को हरा-भरा बनाया जा सके।

अगर हमें दोस्ती के हक़ (Rights) पता न हों या हम उसे न मानते हों और उस पर न चलते हों तो फिर ऐसी दोस्ती के आगे बढ़ पाने की कोई गारंटी नहीं है। इसी तरह अगर हम दोस्ती और मोहब्बत को मज़बूत बनाने वाली बातों को ही न जानते हों तब भी हम नए दोस्त बनाने में हमेशा नाकाम रहेंगे या जो दोस्त पहले से हमारे पास हैं, उन्हें भी खो देंगे।

आईए! देखते हैं कि इस बारे में हमारे पहले इमाम हज़रत अली[अ०] क्या कह रहे हैं:

ख़ुश अख़्लाक़ी

नये दोस्त बनाने और लोगों को अपनी तरफ़ खींचने

का एक बेहतरीन रास्ता यह है कि इन्सान के चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट हो और उसका अंदाज़ मोहब्बत भरा हो। इसीलिए तो कहा जाता है कि इन्सान किसी की तरफ़ उसका खुला हुआ दरवाज़ा देखकर नहीं जाता है बल्कि खिला हुआ चेहरा देखकर जाता है।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> खिला चेहरा मोहब्बत व दोस्ती का फंदा है।[(1)]

नर्म दिली और मेहरबानी

मेहरबानी, नर्म दिली और अच्छा अंदाज़ दूसरों को अपनी तरफ़ खींचने और अपनी दोस्ती को बाक़ी रखने की चाबी है। इसके उलट सख़्त मिज़ाज वाला इंसान अपने पास से उन लोगों को भी दूर भगा देता है जो पहले से उसके पास होते हैं और इस तरह वह बिल्कुल अकेला होकर रह जाता है। नर्म मिज़ाजी के असर और उसके नतीजे में इन्सान के दोस्तों की तादाद बढ़ने के बारे में इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> जिस पेड़ की लकड़ी नर्म हो, उसकी टहनियाँ घनी होती हैं।[(2)]

इसी तरह रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक अपनाने और उनकी मदद करने के बारे में इमाम अली[अ०] यूँ फ़रमाते हैं:

> जिस आदमी का मिज़ाज नर्म हो वह अपनी क़ौम की मोहब्बत को अपने लिए हमेशा बाक़ी रख सकता है।[(3)]

इसका मतलब यह है कि दोस्ती सिर्फ़ नर्म मिज़ाजी व मेहरबानी के साथ ही आगे बढ़ सकती है।

इंसाफ़

मिलने-जुलने में इंसाफ़ बरतने के मायनी यह हैं कि

इन्सान दूसरों के मुक़ाबले में ख़ुद को आगे न रखे, किसी का हक़ न छीने और ज़िन्दगी के हर मैदान में ख़ुद को दूसरों के बराबर ही समझे।

जिस इंसान के मिज़ाज में इंसाफ़ होता है वह दूसरों के साथ मेल-जोल में हमेशा ख़ुद को ही कसौटी मानता है और किसी भी तरह के नुक़सान या फ़ाएदे में अपने दोस्त को भी आधा हिस्सेदार मानता है। वैसे यह काम बहुत मुश्किल काम है जिस पर हर आदमी अमल नहीं कर सकता।

इस बारे में इमाम अली[अ०] इस तरह फ़रमाते हैं:

> अपने और दूसरे के बीच हर मामले में अपने आप को तराज़ू बनाओ। जो अपने लिए पसन्द करते हो वही दूसरों के लिए पसन्द करो और जो अपने लिए नहीं चाहते उसे दूसरों के लिए भी न चाहो। जिस तरह यह चाहते हो कि तुम पर ज़ुल्म न हो उसी तरह दूसरों पर भी ज़ुल्म न करो और जिस तरह यह चाहते हो कि तुम्हारे साथ अच्छा अंदाज़ अपनाया जाए उसी तरह दूसरों के साथ तुम भी अच्छा अंदाज़ अपनाओ। जो चीज़ तुम्हें दूसरों के अंदर बुरी लगती है वह अगर तुम्हारे अंदर भी हो तो उसे बुरा ही समझो।[(4)]

दूसरों के साथ इंसाफ़ से काम लेना जहाँ एक तरफ़ इंसान को दिली सुकून देता है, वहीं उसे दूसरों की नज़र में महबूब भी बनाता है जिससे सब मोहब्बत करते हैं। इस तरह उसके दोस्तों का सर्किल ज़्यादा से ज़्यादा फैलता जाता है क्योंकि इंसाफ़ का सबसे आसान मतलब यही है कि दूसरों के हक़ को मानने और अपने हक़ पर राज़ी रहने के साथ साथ अपने हक़ से ज़्यादा माँगने या दूसरों पर ज़ुल्म करने से बचना और यह वह काम है जिसे हर आदमी पसन्द करता है।

इसी बात की तरफ़ इशारा करते हुए इमाम अली[अ०] नहजुल बलाग़ा में फ़रमाते हैं:

इंसाफ़ करने से दोस्तों की तादाद बढ़ती है।[5]

बेवजह परेशान न करना

कभी-कभी कुछ लोग अपने दोस्तों से ऐसी उम्मीद लगाए रखते हैं जिनकी वजह से उनके दोस्तों को बड़ी परेशानी हो जाती है। इसलिए अपने दोस्तों के साथ हमें इस तरह रहना चाहिए कि हमारे साथ रहकर उन्हें किसी तकलीफ़ के बजाए सुकून महसूस हो।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

सब से बुरा भाई वह है जिसके लिए ज़हमत उठाना पड़े।[6]

अपने दोस्तों से बड़ी-बड़ी उम्मीदें न रखना दोस्ती की शर्तों में से एक शर्त है। यह वह चीज़ है जिससे दोस्ती बहुत मज़बूत हो जाती है। इससे ज़िन्दगी में आसानियाँ भी पैदा हो जाती हैं। सच तो यह है कि अगर अपने लिए दूसरों को तकलीफ़ न दी जाए तो हम सब ख़ुशी-ख़ुशी ज़िन्दगी गुज़ार सकते है।

दूसरों का हक़ बर्बाद न करना

कभी-कभी दोस्ती में इन्सान से ऐसी ग़लतियाँ भी हो जाती हैं जिनकी वजह से दोस्तों के हक़ पर असर पड़ने लगता है और इन्सान अपने बहुत ज़रूरी कामों को भी करने से रह जाता है। यूँ भी होता है कि कभी-कभी दोस्ती को मज़बूत बनाने के लिए ख़ुद दोस्ती की शर्तों का ही ध्यान नहीं रखा जाता और यह कहकर बात घुमा दी जाती है कि दोस्ती में तो ऐसा चलता ही रहता है। जो भी हो लेकिन पक्की दोस्ती से दूसरों के हक़ पर कोई असर नहीं पड़ना चाहिए। जैसे अगर हम ने किसी दोस्त की तौहीन कर दी हो या उसका उधार न चुकाया हो या फिर उस से सख़्त लेहजे में बात कर ली हो तो हमें यह कहकर जान नहीं छुड़ा लेना चाहिए कि क्या हुआ, हमारा दोस्त ही तो है, ऐसा तो

चलता ही रहता है।

दोस्ती का लिहाज़ रखना दरअसल इन्सान की सच्चाई और मोहब्बत की निशानी है।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

आपसी रिश्तों की वजह से अपने किसी भाई का हक़ बर्बाद मत करो क्योंकि फिर वह भाई कहाँ रहा जिसका तुम हक़ बर्बाद कर दो।[7]

अपनी-अपनी हद के अंदर रहना

बैलेंस भरी ज़िंदगी, दोस्ती समेत हर काम के लिए अच्छी है। इसके उलट दोस्ती हो या दुश्मनी, किसी भी काम में हद से आगे बढ़ जाना हमेशा नुक़सानदेह होता है। कभी कभी दो दोस्त एक-दूसरे के इतने पास आ जाते हैं और एक-दूसरे की सारी बातों, आदतों और राज़ों को इतना ज़्यादा जान जाते हैं कि अगर किसी दिन उनकी दोस्ती दुश्मनी में बदल जाए तो दोनों को इतना ज़्यादा नुक़सान उठाना पड़ता है कि जिसकी कोई हद नहीं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि ऐसे दोस्त एक-दूसरे के इतने आदी हो जाते हैं कि अगर कभी उनके ताल्लुक़ात ख़राब हो जाएं, उनमें दूरी पैदा हो जाए या उनकी दोस्ती दुश्मनी में बदल जाए तो उन्हें दिमाग़ी तौर पर बहुत सख़्त परेशानी उठाना पड़ती है। ऐसे में वह ख़ुद को इन ख़तरनाक हालात से बचा ही नहीं पाते। इसलिए हमें चाहिए कि हम किसी से दुश्मनी में भी हद से आगे न बढ़ें क्योंकि अगर किसी दिन दुश्मन की दुश्मनी भी दोस्ती में बदल जाए तो दुश्मनी के वक़्त का बुरा बर्ताव हमेशा शर्मिंदगी और दिमाग़ी उलझन पैदा करता रहेगा।

इस सिलसिले में हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:

अपने दोस्त से बस एक हद तक मोहब्बत करो क्योंकि हो सकता है कि किसी दिन वह तुम्हारा दुश्मन हो जाए और इसी तरह अपने दुश्मन
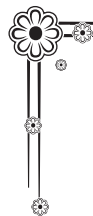
> से दुश्मनी भी एक हद के अंदर ही रखो क्योंकि हो सकता है कि किसी दिन वह तुम्हारा दोस्त बन जाए।[8]

मोहब्बत भरा अंदाज़

दोस्ती में मज़बूती लाने के लिए ज़रूरी है कि इन्सान अपनी दिली मोहब्बत का इज़हार भी करे यानी मोहब्बत करने के साथ-साथ अपनी ज़बान से भी मोहब्बत दिखाए।

दीन ने भी हमें यही बताया है कि इन्सान अपने दीनी भाईयों से अपनी मोहब्बत और अपनाईयत को भी दिखाए।

हज़रत अली[अ०] हमें ख़ुदा के उन बन्दों की बातें भी बताते हैं जिनके पास ख़ुदा का इल्म है जैसेः

> वह एक-दूसरे की (मदद के लिए) आपस में मिलते-जुलते रहते हैं और जब मिलते हैं तो सच्ची मोहब्बत के साथ।[9]

ऐसा मेल-जोल ही दोस्ती को मज़बूत बनाता है और इन्सानों के बीच दोस्ती को बढ़ाता है।

दोस्त की कमियों को छुपाना

सच्चे दोस्त एक-दूसरे की इज़्ज़त-आबरू का लिहाज़ करते हैं और एक-दूसरे की कमियों व बुराईयों को दूसरों के सामने बयान नहीं करते। ऐसे दोस्त एक-दूसरे की पीठ पीछे न उनकी बुराईयाँ गिनाते हैं और न उनकी ग़ीबत करते हैं।

इमाम अली[अ०] ने इस बारे में एक लम्बा ख़ुतबा भी दिया हैः

> जिन लोगों का दामन ग़लतियों से पाक-साफ़ है और ख़ुदा के करम की वजह से गुनाहों से बचे हुए हैं उन्हें चाहिए कि वह गुनाहगारों और ग़ल्तियाँ करने वालों पर रहम करें। यह
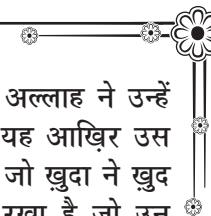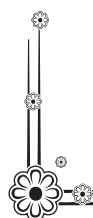
> इस बात का शुक्र होगा (कि अल्लाह ने उन्हें गुनाहों से बचाए रखा है)... यह आख़िर उस पर्दे को क्यों नहीं याद करता जो ख़ुदा ने ख़ुद उसके ऐसे गुनाहों पर डाल रखा है जो उन गुनाहों से भी बड़े थे जिनकी वह ग़ीबत कर रहा है। वह आख़िर क्यों किसी ऐसे गुनाह की वजह से उसकी बुराई करता है जबकि ख़ुद भी वैसे ही गुनाह कर चुका है। ऐ ख़ुदा के बन्दे! झट से किसी पर गुनाह का ऐब मत लगा क्योंकि हो सकता है कि अल्लाह ने उस गुनाह को बख़्श दिया हो। अपने किसी छोटे (से छोटे) गुनाह के लिए भी इत्मिनान न करना क्योंकि हो सकता है कि उस पर तुम्हें अज़ाब होने वाला हो। इसलिए तुम में से जो भी किसी दूसरे की बुराईयें को जानता हो उसे उन बुराईयों को दूसरों के सामने बयान करने से बचना चाहिए उस इल्म की वजह से जो ख़ुद उसे अपने गुनाहों के बारे में है।[10]

बुराई का जवाब अच्छाई से देना

अगर किसी के दोस्त से कोई ग़लती हो जाए तो उसे चाहिए कि वह उसके साथ बुराई करने, उसकी तौहीन करने और ईंट का जवाब पत्थर से देने के बजाए उसके साथ शराफ़त भरे अंदाज़ से पेश आए क्योंकि सिर्फ़ यही वह तरीक़ा है जिससे उसका दोस्त अपने किए पर शर्मिन्दा भी होगा और अपनी ग़लती का एहसास भी कर लेगा। इसी तरह अगर किसी दोस्त से किसी नुक़सान का ख़तरा हो तो भी उसके साथ नेकी करना उससे होने वाले ख़तरे को रोकने का बेहतरीन ज़रिया है। बेशक बुराई का जवाब बुराई से देना मामले को सुलझाता नहीं है बल्कि उसे और उलझा देता है।

इमाम अली^{अ०} फ़रमाते हैं:

> अपने भाई पर एहसान करके उसे सही रास्ते पर लाने की कोशिश करो और मेहरबानी के ज़रिये उसकी बुराई को दूर करो।[11]

वापसी की उम्मीद

कभी-कभी दोस्तों के बीच कुछ ऐसे मामले जन्म ले लेते हैं जिनकी वजह से उनके बीच आपसी नाराज़गी और दूरियाँ पैदा हो जाती हैं। ज़्यादातर यह दूरियाँ छोटी-छोटी बातों या दूसरों की चुग़ली या ज़हरीली बातों की वजह से होती हैं लेकिन कुछ ही वक़्त के बाद उन्हें अपनी ग़ल्तियों का एहसास हो जाता है और वह उस नाराज़गी पर शर्मिंदा हो जाते हैं। लेकिन अब उन्हें वापसी का कोई रास्ता दिखाई नहीं देता।

हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं कि नाराज़गी के वक़्त और जुदाई के ज़माने में वापसी के सारे रास्ते बन्द नहीं करना चाहिएं ताकि दोबारा दोस्ती की उम्मीद बाक़ी रहे:

> अपने किसी दोस्त से रिश्ता तोड़ना चाहो तो अपने दिल में इतनी जगह रहने दिया करो कि अगर तुम्हारे दोस्त का तरीक़ा बदल जाए तो तुम्हारे दिल में उसके लिए गुन्जाइश बाक़ी रहे।[12]

दूसरों के साथ मेलजोल

न सिर्फ़ दोस्तों बल्कि दूसरे सारे लोगों से भी ऐसा मेलजोल रखना चाहिए कि दूसरों के दिल में इन्सान की जगह बनी रहे ताकि वह हमारी ज़िन्दगी में हमारी तरफ़ खिंचे रहें और अगर हम मर भी जाएं तो उन्हें अपने बीच से हमारे उठ जाने का एहसास हो। ऐसा न हो कि हमारी ज़िन्दगी और हमारा अंदाज़ उनके अंदर हमारे लिए इतनी

नफ़रत भर दे कि हमारी मौत की ख़बर से उनके होंटों पर मुस्कुराहट बिखर जाए।

दूसरों के साथ जीने का यह हुनर इमाम अली[अ०] ने यह बताया है:

> लोगों से यूँ मिलो कि अगर मर जाओ तो तुम पर रोएं और अगर ज़िन्दा रहो तो उनके दिल में तुम से मिलने का शौक़ बाक़ी रहे।[13]

ऐसी बातों से बचना जिनसे दूरियां पैदा होती हों

दोस्ती का रिश्ता बहुत नाज़ुक होता है और यह हलकी सी आहट से भी टूट जाता है। इसलिए हमेशा इसे बचाए रखने की कोशिश करते रहना चाहिए जिसके लिए दोस्ती को तोड़ने वाली बातों को जानना और पहचानना बहुत ज़रूरी है। कभी-कभी यह भी होता है कि जुदाई का यह पौधा ख़ुद इन्सान के अन्दर से ही फूटता है। गंदी नियतों, भद्दे इरादों और बीमार दिलों का असर कभी न कभी इन्सान के ज़ाहिर पर पड़ ही जाता है और इस तरह सच्चे व मज़बूत दोस्तों के बीच जुदाई हो जाती है।

इमाम अली[अ०] अपनी नसीहत में इस बात की तरफ़ भी ध्यान दिलाते हैं:

> तुम ख़ुदा के दीन के मामले में एक-दूसरे के भाई हो लेकिन बुरी नियतों और एक दूसरे के बारे में बुरे ख़यालों ने तुम्हारे बीच झगड़े का बीज बो दिया है।[14]

इसलिए अगर हम अपने दिल व दिमाग़ को पाक-साफ़ रखें तो हमारी दोस्ती पर कोई असर नहीं पड़ेगा और न ही हमारे बीच जुदाई या दूरी पैदा होगी।

1-नहजुल बलाग़ा, हिकमत-5, 2-हिकमत-214, 3-ख़ुतबा-23, 4-ख़त-31, 5-हिकमत-224, 6-हिकमत-479, 7-ख़त-31, 8-हिकमत-268, 9-ख़ुतबा-212, 10-ख़ुतबा-138, 11-हिकमत-158, 12-ख़त-31, 13-हिकमत-9, 14-ख़ुतबा/113
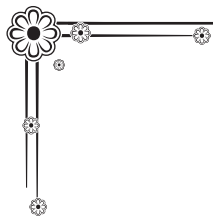
दोस्ती किस से करें?

दोस्त इन्सान की शख़्सियत (Personality) की पहचान होता है यानी किसी के दोस्तों को देखकर उसकी पर्सनालिटी के बारे में आसानी से अंदाज़ा लगाया जा सकता है। अगर हम बिना सोचे-समझे ऐसे लोगों के साथ उठना-बैठना शुरु कर दें जो बद्नाम और बुरी आदतों वाले हों तो उनकी बुराईयाँ हमें भी दबोच लेंगी। इसके उलट अच्छे दोस्त हमारी कामयाबी और रूहानी पाकीज़गी को बढ़ाते हैं।

इसलिए हमारे दोस्तों का हम से बेहतर होना बहुत ज़रूरी है ताकि वह हमारी अक़्ल और हमारे ईमान को बढ़ाने में हमारा साथ दे सकें।

आमतौर पर दोस्ती, दो दोस्तों को एक जैसा बना देती है क्योंकि इन्सान सब से ज़्यादा असर अपने दोस्तों से ही लेता है। अच्छे लोगों से दोस्ती अच्छाई की तरफ़ ले जाती है और बुरे लोगों की दोस्ती बुराई की तरफ़।

इमाम अली[अ०] ने ऐसे लोगों को बहुत बुरा कहा है जो अच्छे इन्सानों के साथ रहने के बाद भी उनके जैसे नहीं बन पाते। इमाम फ़रमाते हैं:

> — (वह) नेक लोगों के दोस्त तो होते हैं मगर उन जैसे काम नहीं करते।[1]
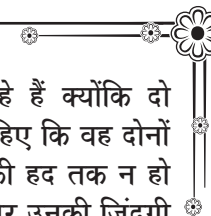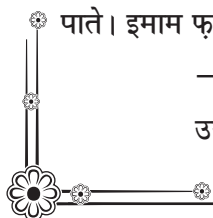
इमाम अली[अ०] ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि दो दोस्तों की दोस्ती का नतीजा यही होना चाहिए कि वह दोनों एक जैसे बन जाएं और ऐसा सिर्फ़ दावे की हद तक न हो बल्कि उन दोनों का अंदाज़, उनके काम और उनकी ज़िंदगी भी एक जैसी होना चाहिए।

इमाम अली[अ०] अपने बेटे इमाम हसन[अ०] के नाम अपने नसीहत भरे ख़त में अच्छे और बुरे लोगों के साथ दोस्ती के बारे में इस तरह फ़रमाते हैं:

> नेक लोगों से मेलजोल रखोगे तो तुम भी नेक बन जाओगे और बुरों से बचे रहोगे तो उन (के असर) से भी बचे रहोगे।[2]

यह इस बात का सुबूत है कि अच्छे या बुरे लोगों की मोहब्बत, दोस्ती और उनके साथ मेल-जोल धीरे-धीरे इन्सान को उनके जैसा बना देता है और उसके अंदर भी उनकी आदतें और अंदाज़ पैदा हो जाता है, बिल्कुल हवा के उस झोंके की तरह जो किसी गुलशन से आता है तो अपने साथ ख़ुश्बू लेकर आता है और अगर किसी जोहड़ से आता है तो बदबू लेकर आता है।

जब मिट्टी फूल के पास जाती है तो उसी का रंग और ख़ुश्बू ले लेती है।

ख़ुदा से मोहब्बत करने वाले मोमिनों की दोस्ती इन्सान की ईमानी और अख़्लाक़ी तरक़्क़ी में बहुत असरदार होती है। यही वजह है कि इमाम अली[अ०] अपने सहाबियों में से किसी को नसीहत करते हुए कहते हैं:

> अल्लाह की अज़्मत व बुज़ुर्गी का ध्यान रखो और उसके दोस्तों से दोस्ती करो।[3]

हज़रत अली[अ०] की नसीहतों में से एक अपने बाप के दोस्तों से मोहब्बत करना और उनके साथ मेहरबानी से पेश आना भी है क्योंकि हमेशा बाक़ी रहने वाली दोस्तियाँ वफ़ादारी और सच्चाई की निशानी होती हैं। जब किसी का बाप एक उम्र गुज़ारने, मुश्किलों से गुज़रने, दुनिया का अच्छा-बुरा देखने और तरह-तरह के हालात में तरह-तरह
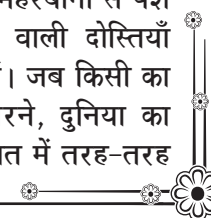
के लोगों को आज़माने के बाद जिन कुछ दोस्तों को अपने लिए चुनता है तो वह उसके बेटों के लिए एक बेहतरीन नमूना होते हैं।

इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> बापों की आपसी मोहब्बत औलाद के बीच एक क़राबत (Relationship) हुआ करती है और मोहब्बत को क़राबत की उतनी ज़रूरत नहीं होती जितनी क़राबत को मोहब्बत की।[4]

बुनियादी फ़ार्मूला दोस्ताना रिश्ते हैं। अगर रिश्तेदार आपस में अपनाईयत और मोहब्ब्त भरे अन्दाज़ में न रहें तो ऐसी रिश्तेदारी का कोई फ़ायदा नहीं है लेकिन मोहब्ब्त भरे रिश्ते अपने आप में ख़ुद भी एक बहुत ख़ास चीज़ हैं, चाहे दोस्तों के बीच किसी तरह की कोई रिश्तेदारी न भी हो। इमाम अली[अ०] के हिसाब से इन्सान अपने बाप के दोस्तों को चचा कह सकता है क्योंकि ऐसी पुरानी और गहरी दोस्ती ख़ुद ही एक तरह की रिश्तेदारी बन जाती है।

इमाम अली[अ०] और दूसरे इमामों[अ०] की हदीसों को सामने रखते हुए आसानी से कहा जा सकता है कि सिर्फ़ उस आदमी से दोस्ती की जाए जो ख़ुदा को मानता और पहचानता हो, दीनदार हो, सच्चा हो, अमानतदार हो, पाकीज़ा हो, वफ़ादार हो, मुश्किलों में साथ छोड़ने वाला न हो और अपने दोस्त के लिए भी वही पसन्द करे जो ख़ुद अपने लिए पसन्द करता हो। ऐसे दोस्त की दोस्ती से इन्सान की ज़िंदगी व तरक़्क़ी में चार चांद लग जाते हैं। साथ ही ऐसी दोस्ती से इन्सान को इल्म व तजुर्बा भी मिलता है और उसे दीन से फ़ायदा भी पहुँचता है।

यही वह लोग हैं जिनसे दोस्ती करना चाहिए और सिर्फ़ इन्हीं की दोस्ती फ़ायदेमन्द होती है।

1- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-150
2- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
3- नहजुल बलाग़ा, ख़त-69
4- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-308

किस से दोस्ती नहीं करना चाहिए

इमाम अली[अ०] बिल्कुल उस इन्सान की तरह हमें ज़िन्दगी के इस कांटेदार रास्ते पर हर वक़्त ख़बरदार करते नज़र आते हैं जिसे हर ख़तरनाक रास्ते की ख़बर हो और जिसे पता हो कि इस रास्ते पर चलने वाला आगे जाकर खाई में भी गिर सकता है या उस रास्ता दिखाने वाले की तरह हमें रास्ता दिखाते हैं जो मुसाफ़िरों को हर आने वाले ख़तरे, आने वाले हर मोड़, घाटियों और लूटने वालों से होशियार करता रहता है ताकि इन्सान दोस्तों की तलाश करते-करते किसी खाई में न गिर जाए और दोस्ती के इस रास्ते पर जो ख़तरे हैं उन्हें न जानने की वजह से कहीं मुसीबतों में न फंस जाए।

अब सब से बड़ा सवाल यह है कि वह कौन-कौन लोग हैं जिनकी दोस्ती से बचना ज़रूरी है ? वह कौन लोग हैं जो दोस्ती के लायक़ नहीं हैं ? उनकी पहचान क्या है ?

यहाँ हम एक बार फिर इमाम अली[अ०] की बातों को ही सामने रखते हुए देखेंगे कि आख़िर वह कौन लोग हैं जिनसे दोस्ती करने से हमारे इमाम ने हमें रोका है।

छोटी सोच वाले

छोटी सोच वाले और जाहिल लोग ख़ासकर अगर वह

बुरे काम या गुनाह भी करते हों तो दोस्ती के लायक़ नहीं होते क्योंकि यह अपने साथ अपने दोस्तों को भी जिहालत और बुराईयों की तरफ़ ले जाते हैं।

इस बारे में इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं:

> ऐसे हर आदमी के साथ उठने-बैठने से बचो जिसकी राय कमज़ोर और काम बुरे हों।[(1)]

गुनाहगार

जो लोग गुनाह और जुर्म करने वाले हों उन लोगों से भी दूर रहना चाहिए क्योंकि ऐसे लोग दूसरों को भी गुनाहों की तरफ़ ले जाते हैं ताकि उन्हें भी अपने जुर्म और गुनाहों में अपना साथी बना लें। इसीलिए जिस तरह हम उन लोगों से दूर भागते हैं जिन्हें कोई छूत की बीमारी हो जाती है उसी तरह हमें चाहिए कि हम गुनाह करने वालों की दोस्ती से भी दूर रहें क्योंकि उनकी दोस्ती हमें भी उनके जैसा ही बना देगी और उनके साथ-साथ हम भी बदनाम हो जाएंगे।

इमाम अली[अ०] इस बारे में फ़रमाते हैं:

> फ़ासिक़ों (खुल्लम-खुल्ला गुनाह करने वालों) के साथ उठने-बैठने से बचे रहना क्योंकि बुराई, बुराई की तरफ़ ही बढ़ा करती है।[(2)]
>
> बुरे कैरेक्टर वाले से दोस्ती न करना वरना वह तुम्हें कौड़ियों के मोल बेच डालेगा।[(3)]

बेवक़ूफ़ और जाहिल

बेवक़ूफ़ उसे कहते हैं जिसके काम नासमझी भरे हों। ऐसे आदमी की बातें पागलों जैसी होती हैं और उसमें अक़्ल व समझ की कमी होती है।

इमाम अली[अ०] ऐसे इन्सान की दोस्ती से बचने के बारे में फ़रमाते हैं:

> बेवक़ूफ़ से दोस्ती न करना क्योंकि वह तुम्हें

> फ़ायदा भी पहुँचाना चाहेगा तो नुक़सान पहुँचा देगा।[(4)]

इमाम अली[अ०] ने एक दूसरी जगह पर ऐसे इन्सानों के लिए ही यह कहा है:

> बेवक़ूफ़ के साथ मत उठा-बैठा करो क्योंकि वह तुम्हारे सामने अपने कामों को सजाकर पेश करेगा और यह चाहेगा कि तुम भी उसी के जैसे हो जाओ।[(5)]

जाहिलों और बेवक़ूफ़ों से दोस्ती ख़त्म करने का रिज़ल्ट बहुत अच्छा होता है और यह एक ऐसा काम है जैसे किसी ने अक़्लमन्दों से दोस्ती कर ली हो।

जाहिलों से दोस्ती ख़त्म करने वालों को नुक़सान के एहसास से बचाने के लिए इमाम अली[अ०] इस काम के फ़ायदे के बारे में यूँ फ़रमाते हैं:

> जाहिल इंसान से रिश्ता-नाता तोड़ना अक़लमन्द से रिश्ता जोड़ने के बराबर है।[(6)]

कन्जूस

कन्जूस लोग दूसरों को भलाई पहुंचाने से बचते हैं। यह लोग किसी के भी साथ भलाई नहीं करते। इसलिए इनके साथ भी दोस्ती करना बेकार और नुक़सानदेह है।

कन्जूसों से दोस्ती न करने के बारे में इमाम अली[अ०] यूँ फ़रमाते हैं:

> कंजूस से दोस्ती न करना क्योंकि जब तुम्हें उसकी मदद की बहुत सख़्त ज़रूरत होगी तो वह तुम से दूर भाग जाएगा।[(7)]

झूठा

जो आपके सामने दूसरों के बारे में झूठ बोलता है, वह दूसरों के पास जाकर आपके बारे में भी झूठ बोलेगा। झूठे

पर भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि न उसकी बातों की कोई बुनियाद होती है और न उसके तौर-तरीक़ों की।

इमाम अली[अ०] के हिसाब से झूठा आदमी धोखेबाज़ होता हैः

> किसी भी झूठे इंसान से दोस्ती न करना क्योंकि वह सराब (Mirage) की तरह तुम्हारे लिए दूर की चीज़ों को पास और पास की चीज़ों को दूर करके दिखाएगा।[8]

इन्सान के लिए इस से बढ़कर और नुक़सान क्या हो सकता है कि वह ऐसे लोगों को अपना दोस्त बनाए जो अपने दोस्त को धोखे में रखते हों ताकि वह अपने आसपास फैली हुई सच्चाईयों को कभी जान ही न पाए। झूठे की किसी बात पर भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि वह लोगों के साथ सच्चा होता ही नहीं है।

बदनाम

आमतौर पर किसी के बारे में कोई राय बनाने से पहले उसके दोस्तों को देखा जाता है। इसलिए कोई भी मामला हो जैसे कुफ़्र, शिर्क, गुनाह, जुर्म, अख़्लाक़ी बुराईयां, बेदीनी वग़ैरा, इनमें बदनाम किसी भी इन्सान की दोस्ती से दोस्ती करने वाले दूसरे लोगों पर भी ग़लत असर पड़ता है और यह दोस्ती उन्हें भी अपनी लपेट में ले लेती है।

इमाम अली[अ०] के हिसाब सेः

> कोई भी आदमी हो उसे उसके साथी के जैसा समझा जाता है।[9]

बुरे मामलों में बदनाम लोगों के मेलजोल से भी बचने के लिए इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैंः

> बुरे मददगार से कोई भलाई नहीं मिलती और न ही बदगुमान दोस्त से।[10]

दोस्त का दुश्मन

जब हम किसी से दोस्ती करते हैं तो उसके दोस्त हमारे दोस्त और उसके दुश्मन हमारे दुश्मन बन जाते हैं।

इमाम अली[अ०] ने इस बात को इस तरह कहा हैः

> तुम्हारे तीन तरह के दोस्त हैं और तीन तरह के दुश्मन।
> दोस्त यह हैंः तुम्हारा दोस्त, तुम्हारे दोस्त का दोस्त और तुम्हारे दुश्मन का दुश्मन।
> और तुम्हारे दुश्मन यह लोग हैंः तुम्हारा दुश्मन, तुम्हारे दोस्त का दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन का दोस्त।[11]

इस तरह हमारे दोस्त का दुश्मन हमारा भी दुश्मन समझा जाएगा और हमें उसकी दोस्ती से भी बचना चाहिए।

इस तरह की दोस्ती से दूर रहने के बारे में एक जगह इमाम अली[अ०] यूँ फ़रमाते हैंः

> अपने दोस्त के दुश्मन को अपना दोस्त न बनाओ वरना तुम अपने दोस्त के दुश्मन माने जाओगे।[12]

लापरवाह

अच्छे दोस्त की एक पहचान यह भी है कि वह मुश्किल में भी अपने दोस्त के साथ हमदर्दी व मेहरबानी से पेश आता है और उसकी मदद करता है। ऐसे लोग बिल्कुल दोस्ती के लायक़ नहीं होते जो मुसीबतों में अपने दोस्तों का ख़याल नहीं रखते और जिनके लिए इस बात से भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि उनके दोस्त किस हाल में हैं।

हज़रत अली[अ०] इस बारे में ज़रा और आगे बढ़ते हुए ऐसे लोगों को 'दुश्मन' कहते हैंः

> जो तुम्हारी परवा नहीं करता वह तुम्हारा दुश्मन है।[13]

दोस्ती और मोहब्बत में दोस्त-दुश्मन की पहचान

बहुत ज़रूरी होती है। जो अपने असली दोस्त और दोस्ती का दम भरने वाले मक्कार लोगों में फ़र्क़ नहीं रख पाता, ऐसा आदमी सिर्फ़ धोखा ही नहीं खाता बल्कि नुक़सान भी बहुत उठाता है।

कितने ही शैतान हमारे बीच मौजूद हैं जिनके चेहरे इन्सानों जैसे हैं। इसलिए हर ऐरे-ग़ैरे की तरफ़ दोस्ती का हाथ नहीं बढ़ाना चाहिए।

इसी तरह दुश्मन की पहचान भी बहुत ज़रूरी है। यह चीज़ दोस्ती व दोस्त से अलग कोई और चीज़ नहीं है लेकिन यहाँ हम इस बहस में नहीं पड़ेंगे और दोस्ती के लिए ग़लत लोगों के बारे में इसी हद तक बात करते हुए आगे बढ़ना चाहेंगे।

1- नहजुल बलाग़ा, ख़त-69
2- नहजुल बलाग़ा, ख़त-69
3- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-38
4- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-38
5- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-293
6- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
7- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-38
8- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-38
9- नहजुल बलाग़ा, ख़त-69
10- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
11- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-295
12- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
13- नहजुल बलाग़ा, ख़त-31
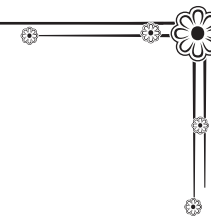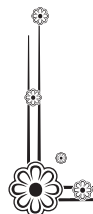
इमाम अली[अ०] का एक ख़ास दोस्त

इमाम अली[अ०] ने जहाँ अच्छे-बुरे दोस्तों और उनकी दोस्ती के बारे में हमें बड़ी गहरी-गहरी बातें बताई हैं, वहीं अपने एक सच्चे दोस्त के बारे में भी बताया है जिसमें एक अच्छे दोस्त की सारी अच्छाईयाँ पाई जाती थीं। उस दोस्त और उसकी अच्छाईयों का ज़िक्र दरअसल इमाम ने इसलिए किया है ताकि इस तरह इमाम उन लोगों को अच्छे दोस्त का एक नमूना भी दिखा सकें जो अच्छे दोस्त की तलाश में रहते हैं।

इमाम अली[अ०] अपने उस दोस्त को अपना भाई बताते हैं मगर उसका नाम लिये बिना।

इमाम अली[अ०] उस दोस्त से अपनी मोहब्बत की वजह यह बताते हैं:

> पिछले ज़माने में मेरा एक दीनी भाई होता था। वह मेरी नज़रों में इस वजह से इज़्ज़त वाला था क्योंकि दुनिया उसकी नज़रों में एक गिरी हुई चीज़ थी। उसकी ज़बान खाने के ज़ायक़ों के पीछे नहीं भागती थी। इसलिए जो चीज़ उसे नहीं मिल पाती थी वह उसकी चाहत ही नहीं करता था और जो चीज़ मिल जाती थी उसे ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल में भी नहीं

लाता था। वह ज़्यादातर चुप रहता था और अगर बोलता था तो बोलने वाले को चुप कर देता था और सवाल करने वालों की प्यास बुझा देता था। यूँ तो वह कमज़ोर था मगर जिहाद का वक़्त आ जाए तो वह बब्बर शेर और भयानक अजदहा बन जाता था। वह जो दलील पेश करता था वह फ़ैसला करने वाली होती थी। वह उन चीज़ों में किसी को सज़ा नहीं देता था जिन में किसी एक बहाने की भी गुंजाइश होती थी। वह उस वक़्त तक किसी को सज़ा नहीं देता था जब तक कि सामने वाले की बात को पूरी तरह न सुन ले। वह उस वक़्त तक अपने किसी दर्द या तकलीफ़ के बारे में नहीं बताता था जब तक कि उस से छुटकारा न पा ले। वह जो करता था वही कहता था और जो नहीं करता था उसे ज़बान पर लाता भी नहीं था। अगर बोलने में कभी उसको दबा भी लिया जाए तो ख़ामोशी में उसको नहीं दबाया जा सकता था। वह बोलने से ज़्यादा सुनने का शौक़ीन रहता था और जब अचानक उसके सामने दो चीज़ें आ जाती थीं तो वह देखता था कि उन दोनों में से कौन सी चीज़ उसे ज़्यादा भा रही है और फिर वह उसी को छोड़ देता था।[1]

इसके बाद इमाम फ़रमाते हैंः

> इसलिए तुम्हें इन आदतों और तौर-तरीक़ों को अपनाना चाहिए। इन पर चलना चाहिए और इनकी चाहत रखना चाहिए। अगर इन सब को पा पाना तुम्हारी ताक़त से बाहर हो तो इस बात को जान लो कि थोड़ी सी चीज़ का ले लेना पूरे को छोड़ देने से बेहतर है।[2]

हज़रत अली[अ०] ने जो बातें अपने बेहतरीन दोस्त के बारे में बताई हैं, उनमें से हर बात हमारी ज़िंदगी के लिए एक बेहतरीन फ़ार्मूला है जिस पर चलकर हम एक अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार सकते हैं। अगर हम अच्छे दोस्तों की तलाश में हैं तो फिर यह अच्छाईयाँ हमारे लिए अख़लाक़ी सिफ़तों (Moral Values) की तरह हैं क्योंकि इनमें से हर सिफ़त (Quality) इस बात का सुबूत है कि उसे ख़ुद में पैदा करने और परवान चढ़ाने वाले ने ख़ुद पर कंट्रोल पाकर अपनी तमन्नाओं और ख़्वाहिशों (Worldly Desires) पर क़ाबू पा लिया है। इसलिए यह बातें जिस किसी के अंदर भी होंगी, वह दोस्ती के लायक़ होगा।

क्या यह सच नहीं है कि ख़ुद इमाम अली[अ०] के अंदर यह सारी अच्छाईयां अपनी आख़िरी सीमाओं पर थीं ?

यहीं से हमें इस सवाल का जवाब भी मिल जाता है कि आख़िर वह क्या बात थी कि जिसकी वजह से इमाम अली[अ०] दोस्त-दुश्मन सब के पसंदीदा इंसान थे और सब के दिलों में बसे हुए थे ? अब यह अलग बात है कि दुश्मन ज़ाहिर में चाहे जो भी कहे या करे मगर उसके दिल की गहराईयों में भी अली[अ०] की मोहब्बत नज़र आती है। वैसे हज़रत अली[अ०] की मोहब्बत सिर्फ़ उन ही दिलों में अपना असर दिखा पाती है जो पाक दिल वाले होते हैं।

इमाम[अ०] ख़ुद इस बारे में यूँ फ़रमाते हैंः

> अगर मैं मोमिन की नाक पर तलवारें मारूँ कि वह मुझे दुश्मन मान ले तब भी वह मुझ से दुश्मनी नहीं करेगा और अगर दुनिया की सारी दौलत काफ़िर के आगे ढेर कर दूँ कि वह मुझे अपना दोस्त समझ ले तब भी वह मुझे अपना दोस्त नहीं मानेगा।[3]

क्योंकि इमाम अली[अ०] ख़ुद भी सच्चे मोमिन से मोहब्बत करने वाले थे और मुनाफ़िक़ों के सख़्त दुश्मन थे।
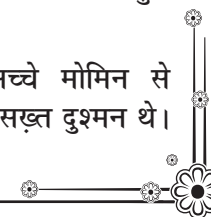
अगर उनकी मोहब्बत हमेशा मोमिनों के दिलों में बसी रहती है तो इसमें कोई ताज्जुब की बात भी नहीं है। उधर मुनाफ़िक़ कभी भी उनकी मोहब्बत का मज़ा नहीं चख सकता।

1- कुछ लोगों का कहना है कि इमाम अली[अ०] के यह दोस्त या अबूज़र ग़फ़्फ़ारी थे या उसमान बिन मज़ऊन या फिर कोई और।

2- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-289

3- नहजुल बलाग़ा, हिकमत-45
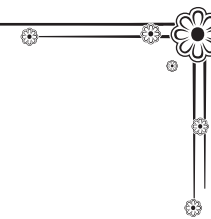
आख़िरी बात

मोहब्बत और दोस्ती इन्सान की ज़िन्दगी को काम का बना देती है और उसकी ज़िंदगी में रूह फूँक देती है। यही दोस्ती व मोहब्बत है जो उसके अंदर उम्मीद और जीने की उमंग जगा देती है।

यही मोहब्बत है जिसकी वजह से हमारे समाज में चहल-पहल दिखाई पड़ती है और इन्सानों के अंदर कोशिश और कुछ करने का जज़्बा बाक़ी रह पाता है।

लेकिन... मोहब्बत का दर्जा इस बात से तय होता है कि जिससे मोहब्बत की जा रही है वह क्या, कैसा और कौन है।

जो लोग मोहब्बत के लायक़ इंसानों को नहीं पहचान पाते वही लोग नक़ली दोस्तों, जल्दी ख़त्म हो जाने वाली मोहब्बत और हवस भरी दोस्तियों के पीछे भागते हैं। सच्चाई तो यह है कि अगर हमारे दोस्त सच में दोस्ती के लायक़ हों तो हमारा दिल उनके रहने की जगह और उनका घर होना चाहिए। ऐसे लोगों पर हमें अपनी सारी मोहब्बतें क़ुर्बान कर देना चाहिएं।

वैसे आम इन्सानों की मोहब्बत से बढ़कर कुछ दूसरी मोहब्बतें भी हैं।

क़ुरआन करीम, अल्लाह तआला को ही मोमिनों का सबसे बेहतर और सबसे अच्छा दोस्त बताता है।[1]

इसी तरह रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते हैंः

> अपनी औलाद की परवरिश मेरी मोहब्बत, मेरे अहलेबैत[अ०] की मोहब्बत और क़ुरआन करीम की तरफ़ ध्यान के साथ किया करो।[2]

अगर किसी से मोहब्बत करना ही है तो फिर कितना अच्छा हो अगर हम इस मोहब्बत के लिए कुछ बेहतरीन हस्तियों को चुन लें।

दुनिया भर में मशहूर ईरानी शायर शेख़ सादी शीराज़ी कहते हैं:

> ऐ सादी! अगर तुम्हें मोहब्बत करना ही है और जवानी का मज़ा लेना ही है तो इसके लिए मोहम्मद[स०] और आले मोहम्मद[अ०] की मोहब्बत ही बहुत है।

अगर मोहब्बत और दोस्ती इन्सान को अपने जैसा बना देती है तो क्यों न हम ख़ुदा, उसके रसूल[स०], उसके भेजे हुए इमामों[अ०] और ख़ुदा के पाक व नेक बन्दों से मोहब्बत करें ताकि इस दुनिया में एक पाकीज़ा ज़िंदगी गुज़ार सकें जिससे हमारी ज़िंदगी भी संवर जाए और आख़िरत भी।

जी हाँ! दोस्ती और मोहब्बत सिर्फ़ मोहम्मद[स०] व आले मोहम्मद[अ०] और उनके घराने वालों के साथ ही जचती है।

अहलेबैत[अ०] के साथ रहकर हमारी हैसियत इमामत व विलायत में खिलने वाली कलियों जैसी हो गई है। सदियाँ गुज़र गईं और ज़माने हो गए कि हम भी अहलेबैत[अ०] की इसी मोहब्बत के क़ैदी हैं। हम ऐसे परिन्दे हैं जो अहलेबैत[अ०] की छत पर बैठे हुए हैं और चाहे हम जहाँ जाएं और जहाँ रहें, सिर्फ़ अहलेबैत[अ०] के पीछे-पीछे चलते जाएंगे।

हमारा दर्जा हमारे मेहबूब को देखकर तय किया जाता है। इसलिए ज़रूरी है कि हम बहुत सोच-समझ कर दोस्ती और मोहब्बत करें।

1- सूरए बक़रा/165
2- अहक़ाक़ुल हक़, 18/498
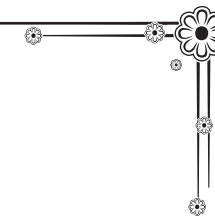
अनमोल मोती

सबसे बेकार आदमी

> लोगों में सब से ज़्यादा बेकार आदमी वह है जो अपनी उम्र में अपने लिए दोस्त भी न बना सके और उस से भी ज़्यादा बेकार वह है जो दोस्त बनाकर भी खो दे।

दूसरे लोगों से मुस्कुराकर और अच्छे अंदाज़ से मिलने से ही इन्सानों में आपसी मेल-मोहब्बत पैदा होती है और आपसी रिश्ते बनते हैं। अगर इन्सान दूसरों को अपनी तरफ़ खींचना चाहता है तो उसे मीठी ज़बान में बात करना ही होगी तभी लोग उसकी तरफ़ खिंचे चले आएँगे और मीठी ज़बान में बात करना कोई ऐसा मुश्किल काम भी नहीं है क्योंकि इसके लिए न कोई फ़िज़िकल मेहनत करना होती है और न दिमाग़ी मेहनत। दोस्त बनाने के बाद दोस्ती और रिश्तों की मिठास को सजोए रखना तो इस से भी ज़्यादा आसान है क्योंकि दोस्ती बनाने के लिए फिर भी कुछ न कुछ करना पड़ता है मगर इसे सजोए रखने के लिए तो कोई बड़ा काम नहीं करना पड़ता।

इसलिए अगर कोई आदमी किसी ऐसी चीज़ को भी सँभालकर न रख सके जिसे बस अपने माथे की सिलवटों को मिटाकर बाक़ी रखा जा सकता है तो भला ऐसे आदमी से बढ़कर बेकार कौन हो सकता है?

कहने का मतलब यह है कि इन्सान को हर एक से मेल-मोहब्बत और हँसते-हँसाते मिलना चाहिए ताकि लोग उसके पास आना चाहें और उसकी तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाएं।

लोगों से कैसे मिलना चाहिए?

> लोगों से इस तरह से मिलो कि अगर मर जाओ तो वह तुम पर रोएँ और अगर ज़िन्दा रहो तो तुम से मिलने के लिए बेचैन रहें।

जो लोगों के साथ नर्मी और अख़्लाक़ से पेश आता है, लोग उसकी तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं, उसकी मदद करते हैं, उसकी इज़्ज़त करते हैं और उसके मरने के बाद उसकी याद में आँसू बहाते हैं। इसलिए इन्सान को चाहिए कि वह इस तरह से जिए कि किसी को उस से शिकायत न हो और न उस से किसी को कोई नुक़सान पहुँचे ताकि उसे अपनी ज़िन्दगी में दूसरों की हमदर्दी भी मिले और उनकी मोहब्बत भी और मरने के बाद भी उसे अच्छे शब्दों से याद किया जाए।

ख़ुद को पसन्द करने का नुक़सान

> जो अपने आप को ही पसंद करने लगता है वह दूसरों की नज़रों में नापसन्द हो जाता है।

ख़ुद को पसन्द करने के बारे में दूसरों के दिलों में नफ़रत व बेइज़्ज़ती पैदा हो जाती है। इसलिए जो भी अपने आप को दूसरों से आगे रखने के लिए बात-बात में अपनी तारीफ़ें करता रहता है दूसरे कभी भी उसे इज़्ज़त नहीं देते। दूसरे लोग उसकी इस सोच को देखते हुए उस से नफ़रत करने लगते हैं और उसे उतना भी समझने को तैयार नहीं होते जितना असल में पहले से होता है।

एक कामयाब दवा

> सदक़ा कामयाब दवा है।

जब इन्सान सदक़े व ख़ैरात से मोहताजों और ग़रीबों की मदद करता है तो वह लोग दिल की गहराईयों से उसके लिए दुआ करते हैं जिसमें उसकी सेहत व बदन के लिए भी दुआ होती है और अल्लाह जब वह दुआएँ सुन लेता है तो उसे शिफ़ा मिल जाती है। इसीलिए रसूले इस्लाम[स०] ने भी फ़रमाया है:

> अपने बीमारों का इलाज सदक़े से करो'

आख़िरत में क्या होगा?

> दुनिया में बन्दों ने जो कुछ किया है वह आख़िरत में उनकी आँखों के सामने होगा।

इन्सान इस दुनिया में जो भी अच्छे-बुरे काम करता है उनकी असलियत हमें इस दुनिया में नहीं दिख पाती मगर आख़िरत में जब हमारी आँखों से सारे पर्दे उठा दिये जाएंगे तब हमारे आमाल और हमारे काम इस तरह से हमारी आँखों के सामने आ जाएंगे कि हम किसी भी तरह उनका इनकार नहीं कर पाएँगे।

अल्लाह ने क़ुरआन करीम के सूरए ज़िलज़ाल की आयत/6-7 में यही फ़रमाया है:

> उस दिन सारे इन्सान अपने-अपने आमाल देखने के लिए गिरोह-गिरोह क़ब्रों से निकलेंगे। फिर जिस ने ज़रा सी भी नेकी की होगी वह उसे देख लेगा और जिसने ज़रा सी भी बुराई की होगी वह भी उसे देख लेगा।

वह दौलत जो कभी ख़त्म नहीं होती

> क़नाअत वह दौलत है जो ख़त्म नहीं हो सकती।

क़नाअत का मतलब यह है कि इन्सान के पास जो कुछ भी है वह उसी पर ख़ुश रहे यानी कम मिलने पर परेशान न हो और अगर वह थोड़े पर राज़ी नहीं होगा तो फिर रिश्वत, धोखाधड़ी, मक्कारी, झूठ, बेईमानी और हसद जैसी भयानक बीमियारियों का शिकार हो जाएगा और फिर इन्हीं बुराईयों के रास्ते अपनी लालच को पूरा करने में लग जाएगा।

जब अक़्ल बढ़ती है तो...

> जब आदमी की अक़्ल बढ़ती है तो वह बातें कम करने लगता है।

जब इन्सान की अक़्ल व समझ बढ़ जाती है तो उसके दिमाग़ व सोच में एक तरह का बैलेंस बन जाता है। फिर अक़्ल भी हमारे बदन के दूसरे हिस्सों की तरह ज़बान को भी अपने कँट्रोल में ले लेती है जिसका नतीजा होता है कि ज़बान बस वही बातें करती है जो अक़्ल उससे कहलवाती है और बिना सोचे-समझे कुछ नहीं कहती।

ज़ाहिर है कि सोच-बिचार के बाद जो बात ज़बान से निकलेगी वह छोटी भी होगी और फ़ालतू चीज़ों से पाक भी होगा।